**International Journal of Advanced Research and Development**
**ISSN: 2455-4030**
**Impact Factor: RJIF 5.24**
**www.advancedjournal.com**
**Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 733-735**

# प्रेमचंद की कहानियों में इतिहास और परम्परा

**डॉ0 विजय शंकर मिश्र**
हिन्दी विभाग, सत्यवती कॉलेज (सांध्य), अशोक विहार, नई दिल्ली, दिल्ली, भारत।

## प्रस्तावना

सतत परिवर्तनशील सांस्कृतिक परम्पराएँ अपने जीवंत रूप में इतिहास अथवा सामाजिक सत्य बनती हैं। वे 'सूक्ष्म इतिहास' या कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ ठाकुर के शब्दों में 'अतीत रस' कहलाती हैं। साहित्यकार इतिहास की तथ्यपरक घटनाओं एवं तिथियों, नामों आदि का सम्मान करते हुए भी उस पर आधारित 'सत्य' पर ही रीझता है। उसका ध्यान वहीं केन्द्रित रहता है। 'सत्य' की ललित अभिव्यक्ति ही 'अतीत रस' या 'इतिहास रस' है। प्रेमचंद की अनेकानेक कहानियों में इतिहास के तथ्य एवं राष्ट्रीय परम्पराएँ अपने सम्पूर्ण वैभव के साथ विद्यमान हैं।

'रानी सारंधा' में कहानीकार ने सेनानायकों की कोटियों का विश्लेषण करते हुए यथार्थवादी और आदर्शवादी मानसिकताएँ विवृत की हैं। ऐसा उन्होंने राष्ट्र एवं भावों के निर्माण के संदर्भ में किया है। राष्ट्र–निर्माता सेनानायक यथार्थ का सम्मान करके रणनीति बनाता है। वह 'वक्ती पलायन' को युद्ध–नीति का अंग मानता है। ऐसे यथार्थवादी नायक का आदर्श राष्ट्र का निर्माण करना होता है। दूसरी ओर बलिदानी सेनानी हैं। वे सामरिक विजय पर बहुत ध्यान नहीं देते। उनका मनोविज्ञान 'आन–बान–शान' की रक्षा पर होता है। उनका आदर्श 'वीरगति' है। वे युद्ध में हमेशा ही सफल या विजयी नहीं होते, लेकिन राष्ट्र की वेदी पर प्राणों की आहुति देने का उनका आदर्श समाजों के मानस में साहस, वीरता, ओजस्विता, स्वाभिमान, अस्मिता की रक्षा, रचनात्मक आक्रामकता आदि महान् मूल्यों को अवस्थित करता है। यह अवस्थन ही उनके आदर्शों का यथार्थपरक लक्ष्य है। मुंशी प्रेमचंद दोनों कोटि के नायकों को बराबर का सम्मान देते हैं। रानी सारंधा की मूल संवेदना बलिदानी सेनानी के स्वरूप को विवृत करती है।[1] 'सती' की चिंता भी इसी मानसिकता के कारण पति रत्नसेन के जीवित रहते हुए भी सती हो जाती है क्योंकि उसने रणभूमि से पलायन किया था।[2] ऐसी उदात्त और किञ्चित अव्यावहारिक समझ से शून्य होने पर राज्य–राष्ट्र पतनशील होने लगते हैं। 'शतरंज के खिलाड़ी' इस सत्य का प्रामाणिक दस्तावेज है। राजनीतिक भावों का अभाव अवध का पतन करवाता है। मिर्जा सज्जाद अली और मीर रौशन अली पूरे शासन–तंत्र के प्रतीक हैं। अपने बादशाह वाज़िद अली शाह के लिए उनकी आँखों में आँसू की एक बूंद तक नहीं आई, लेकिन शतरंज के वजीर के लिए उन्होंने एक–दूसरे के प्राण ले लिए। व्यक्तिगत् वीरता से सम्पन्न किन्तु राष्ट्रवादी आदर्शों से शून्य ऐसी मानसिकताएँ ही पराधीनता लाती है। यह आदर्शमण्डित होने का आग्रह करती यथार्थवादी कहानी है।[3]

रणनीति का सम्मान करके सफल होने वाले सेनानायकों या नेताओं पर प्रेमचंद ने विस्तार से प्रकाश नहीं डाला। इसकी झलकें अवश्य मिल जाती हैं। 'सत्याग्रह' में कांग्रेस के जिला मंत्री पहरेदारों को रिश्वत देकर भी लक्ष्य प्राप्ति हेतु पण्डित जी को मिठाई का दोना पहुँचवाते हैं। यहाँ भी लक्ष्य राष्ट्रीय आंदोलनों की सफलता से सम्बन्धित है।[4]

राष्ट्रीय इतिहास का निर्माण मूल्यों की स्थापना के बिना असंभव है। मूल्य एवं भाव ही परम्परा बनते हैं– रचनात्मक परम्परा। ऐसी परम्पराएँ राष्ट्र के चेतन होने की आवश्यक शर्त हैं।

मुंशी प्रेमचंद राजनीतिक मूल्यों के अधःपतन को इतिहास का पतनशील समय मानते हैं। ऊपर 'शतरंज के खिलाड़ी' की चर्चा हुई। प्रेमचंद इस कहानी के माध्यम से इतिहास से शिक्षा लेने का आग्रह करते हैं। इस कहानी में नवाब वाजिद अली शाह के समय के अवध प्रांत की सर्वतोमुखी पतनशीलता, नपुंसक विलासिता तथा ग्राम–शोषण का अतीव प्रभावी चित्रण हुआ है। उस समय के शासकीय चरित्र की भयावह गिरावट दिल दहला देती है। हरामखोरों को परिश्रम से अरुचि थी। उन्हें समय बिताने की समस्या थी। देश में हाहाकार था लेकिन सामंत शतरंज की चालों में व्याप्त थे। वेश्याओं, भाटों–भाणों की चांदी थी। आर्थिक शोषण विकराल रूप धारण किए था। कंपनी का ऋण बढ़ता जाता था। वार्षिक करों तक की वसूली नहीं हो पा रही थी। प्रेमचंद इस सबके बीच मीर रौशन अली की बेगम के व्यभिचारिणी होने की ओर संकेत करते हैं। ऐसी कायर–विलासी–निर्वीर्य–पौरुषहीन परिस्थितियों के पनपने पर राज्य का पराधीन होना अवश्यंभावी है।

यह राजनीतिक अधःपतन की चरम सीमा थी। राष्ट्रवाद के संपूर्ण अभाव में नवाब साहब बंदी बनाए जाते हैं और खून का एक कतरा तक नहीं बहता। विरोध में कोई प्रतिक्रिया नहीं होती। मीर और मिर्जा कायर नहीं होने के कारण शतरंज के 'वजीर' के लिए जान लेते–देते हैं, लेकिन अपने 'बादशाह' को कैद होता देख–सुन कर उनके रक्त में कोई उबाल नहीं आता क्योंकि व्यक्तिगत् वीरता स्वार्थ–पूर्ति एवं अहं की रक्षा मात्र तक सीमित है। बादशाह या बादशाहत या राज्य–राष्ट्र के प्रति किसी भी तरह की प्रतिबद्धता के सर्वथा अभाव के वर्णन–चित्रण आज भी चेतावनी देते प्रतीत होते हैं।[5] यह कहानी इतिहास से निकल कर अपने एवं भावी समय को चेतावनी देती है।

कथा–सम्राट ने अपनी बहुत–सी कहानियों में धार्मिक परम्पराओं और उनके तथाकथित वाहकों द्वारा जाति एवं धर्म के आधार पर किए जा रहे शोषण के अत्यंत प्रभावशाली वर्णन किए हैं। धार्मिक परम्पराओं ने भारतीय जनमानस की एक खासी बड़ी दूरी तक रचना की है। यह रचना विलक्षण है। एक ओर इनकी रचनात्मकता असंदिग्ध है, दूसरी ओर इनका सहारा लेकर प्रतिगामी शक्तियाँ इनकी गलत अमानवीय व्याख्या करके व्यापक समाजों का क्रूर शोषण करती रही हैं। 'सवा सेर गेहूँ', 'सद्गति' सदृश कहानियों में इस तथ्य के दर्शन किए जा सकते हैं। किसान शंकर 'सवा सेर गेहूँ' का कर्ज लेने पर आजीवन दास बनने को अभिशप्त है। उसके बाद उसके पुत्र की नियति भी वही है।[6] दुखी 'सद्गति' के लिए

अपना विकराल शोषण करवाता है।[7] धार्मिक अंधविश्वासों ने इन चरित्रों के व्यक्तित्व को बनाया है। वे धर्म के दर्शन एवं मूल्यों से अपरिचित हैं। इसलिए वे 'धर्म' का मात्र वही अर्थ समझते हैं, जो उन्हें विप्र जी सदृश शोषक व्याख्याकार समझाते हैं। 'पूस की रात' का हल्कू किसान भी अपनी दुर्दशा का कारण विषम व्यवस्था को नहीं मान कर 'तकदीर की खूबी' मानता है।[8] 'कायर' में भारतीय समाजों में जाति–व्यवस्था के भयंकर प्रभाव का चित्रण है। केशव ब्राह्मण और प्रेमा वैश्य है। इसलिए दोनों का विवाह नहीं हो सकता। ऐसे में अंतिम नियति, अंतिम समाधान प्रेमा का आत्मघात है।[9] मुंशी प्रेमचंद स्पष्टतया इस प्रकार की स्थितियों का चित्रण करके बदलाव के आकांक्षी हैं।

प्रेमचंद ने अपनी कई कहानियों में राजपूती चरित्र के पारम्परिक स्वरूप के वर्णन किए हैं। पूर्वमध्यकालीन भारतीय राजनीति में क्षत्रिय चरित्र शायद विश्व इतिहास में अभूतपूर्व है। वह केवलमात्र वीरगति पर मुग्ध हुआ है। 'रानी सारंध में 'रणनीति' हाशिए पर है। वहाँ वीरगति, बलिदान का ही महत्त्व है। जान देकर अपनी गरिमा की रक्षा करने वाली मानसिकता राजपूतों के पारम्परिक चरित्र को मूर्तिमंत करती है।[10] यह एक भंगिमा है। 'मर्यादा की वेदी' में उन्हीं की विलासता एवं रक्तपाती स्वभाव के दर्शन होते हैं।[11] यह दूसरी भंगिमा है। 'राजा हरदौल में अदम्य वीरता एवं शौर्य के साथ–साथ हिंसक सामंती मानसिकता के चित्र राजपूती परम्परा और इतिहास को एक बिन्दु पर मिला देते हैं। कहानी सुनने–पढ़ने के उपरांत पाठक–श्रोता एक 'आह' भरकर मात्र यही सोचकर व्यथित होता है कि कुलीना और हरदौल का अपराध क्या था?[12] 'परीक्षा' इतिहास पर आधारित काल्पनिक घटनाप्रधान कहानी है। इसमें रक्तपाती लुटेरा नादिरशाह का लंबा वक्तव्य 'जौहर' या बलिदान या गरिमा की सुरक्षा की परम्परा को स्मृत करने की 'शिक्षा' देता है।[13]

अपनी अनेक कहानियों में हिन्दी कथा–साहित्य के महानतम् हस्ताक्षर ने नारी के संदर्भ में इतिहास एवं परम्पराओं के स्वरों को अत्यन्त विदग्धतापूर्वक चित्रित किया है। ऐसे अवसरों पर उनका कौशल देखते ही बनता है। 'मर्यादा की वेदी' की ऐतिहासिक प्रभा[14] और 'कायर' की काल्पनिक प्रेमा[15] की व्यथाएँ एवं सर्वथाभिन्न अवस्थाओं में किए गए आत्मघात सामाजिक पारम्परिक नियमों एवं आचार संहिताओं की नारीत्व एवं भावनाशीलता पर विजय का दर्दनाक दस्तावेज हैं। 'राजा हरदौल' की कुलीना की पीड़ा भी पारम्परिक पुरुष की नारी–विषयक यथास्थितिवादी सोच का कुरूप परिणाम है। यह समझ हरदौल के प्राण लेकर ही संतुष्ट होती है।[16] 'रानी सारंधा' में स्त्री पुरुष के समकक्ष है। वहाँ वह परंपरावादी होते हुए भी इतिहास की मांग को अपने 'पौरुष' से पूरा करती है।[17] भिन्न रूप में सारंधा की झांकी 'होली का उपहार' की सुखदा में किए जा सकते हैं। सुखदा स्वराजी है, स्वदेश–प्रेमी है, अपने ढंग से आंदोलनकारी है। वह सारंधा की भाँति पुरुष के साथ बराबरी पर आसीन है।[18]

'परीक्षा' की मूल संवेदना एक बड़ी सीमा तक बेगमों के विलास की वस्तु, बनने की सूचना देते हैं।[19] भोग–विलास की स्थितियों में स्त्री अपनी पहचान खो देती है।

'सती' की मुलिया में भारतीय नारी का पारम्परिक पति–प्रेम लक्षित होता है। दोषी–व्यभिचारी पति मृत्यु के बाद भी अपनी पत्नी की स्मृतियों में जीवित है। मुलिया वैधव्य को विवशता में नहीं बल्कि चिरजीवंत पति–प्रेम के कारण स्वेच्छा से धारण करती है।[20]

प्रेमचंद के विचारानुसार परम्पराओं का सम्मानकर्त्ता ही स्थापित मूल्यों में परिवर्तन करने में सक्षम हो सकता है। सामाजिक–धार्मिक परम्पराओं का जानकार और उनका आदर करने वाले ही विरासत के पागलपन को दूर कर सकते हैं। अनेक संदर्भों में प्रेमचंद की सोच ऐसी सूचनाएँ देती हैं। 'ब्रह्म का स्वाँग' की स्त्री परम्पराओं की समीक्षा करती है, जो आधुनिक मनुष्य का कर्त्तव्य है।[21] इसी भाँति 'कायर' की प्रेमा परम मर्यादावादी–परम्परावादी है लेकिन वह उस साहस से सम्पन्न है जो उसे परम्पराओं को इतिहास के तराजू में तौल कर, काँट–छाँट–तराश कर समयानुकूल बनाने वाली बुद्धि प्रदान करता है। यहाँ कोरी क्रांतिकारी बातें करने वाला केशव विशुद्ध पाखण्डी सिद्ध होता है। यह यथार्थ भी अपनी जगह कायम है कि जड़ मूल्यों की बलात् आरोपित ताकत 'स्त्री' को कुण्ठित और प्रेमा को आत्महत्या के लिए विवश करती है।[22] 'नमक का दारोगा' का वंशीधर भी धार्मिक परम्पराओं द्वारा प्रदत्त मूल्यों की शक्ति से सम्पन्न होकर समकालीन भ्रष्ट तंत्र को मानसिक रूप से परास्त करने में सफल होता है।[23] 'शान्ति' कहानी व्यक्तिवादी यूरोपीय संस्कृति एवं जीवन–शैली पर पारम्परिक भावनाशील भारतीय जीवन–मूल्यों की विजय की सूचना देती है।[24]

प्रेमचंद की कहानियों में इतिहास की सूक्ष्म तथ्य सरलता से खोजे जा सकते हैं। 'रानी सारंधा' में सत्ता–लिप्सा से उद्भूत संबंधहीनता[25], 'परीक्षा' में आततायी लुटेरों की ध्वंसात्मक–रक्तपाती प्रवृत्ति[26], 'सती' में सती–प्रथा[27], 'शतरंज के खिलाड़ी' में राजनीति–बोध से शून्य शासक–वर्ग[28] के वर्णन हुए हैं।

प्रेमचंद यथार्थ की अवहेलना कहीं नहीं करते। इसीलिए उन्होंने भारतीय समाजों में पारम्परिक सामाजिक विधि–विधानों की अपार शक्ति के तथ्य को कभी नकारा नहीं। 'मर्यादा की वेदी' की मानुषी प्रभा, राजा पति राणा एवं प्रेमी मंदार–राजकुमार– सभी पारम्परिक सामाजिक नियमों के समक्ष पराजित हैं। प्रभा कहीं नहीं जा सकती, राणा जो कर सकते थे वह कर चुके और अब जो चाहते हैं– वह हो नहीं सकता और मंदार–राजकुमार की नियति आत्मघात के अतिरिक्त और कुछ नहीं है।[29] 'राजा हरदौल' की कुलीना इन्हीं परम्पराओं से बँधी होने के कारण पति से किसी तरह का तार्किक संवाद करने को स्वतंत्र नहीं है।[30] ऐसी कहानियों में प्रेमचंद इतिहास की प्रवृत्तियों के साथ परम्पराओं को गूँथने में पर्याप्त सफल हुए हैं।

पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने लिखा है कि विरासत हमारे सामने अपनी उपलब्धियों एवं पागलपन दोनों के साथ उपस्थित होती है।[31] वस्तुतः एवं तत्त्वतः विरासत अथवा परम्पराओं की समीक्षा प्रत्येक युग के मनुष्यों का, समाजों का अनिवार्य दायित्व है। प्रेमचंद ने यह दायित्व इतिहास–बोध के साथ मिलाकर पूरा किया है। उनकी महान् प्रतिभा इस अभिव्यक्ति को अधिकाधिक कलात्मक बनाने के साथ–साथ प्रेरक भी बनाती दीखती है।

## संदर्भ


1. रानी सारंधा, प्रेमचंद
2. सती, प्रेमचंद
3. शतरंज के खिलाड़ी, प्रेमचंद
4. सत्याग्रह, प्रेमचंद
5. शतरंज के खिलाड़ी, प्रेमचंद
6. सवा सेर गेहूँ, प्रेमचंद
7. सद्गति, प्रेमचंद
8. पूस की रात, प्रेमचंद
9. कायर, प्रेमचंद
10. रानी सारंधा, प्रेमचंद
11. मर्यादा की वेदी, प्रेमचंद
12. राजा हरदौल, प्रेमचंद
13. परीक्षा, प्रेमचंद
14. मर्यादा की वेदी, प्रेमचंद

15. कायर, प्रेमचंद
16. राजा हरदौल, प्रेमचंद
17. रानी सारंधा, प्रेमचंद
18. होली का उपहार, प्रेमचंद
19. परीक्षा, प्रेमचंद
20. सती, प्रेमचंद
21. ब्रह्म का स्वाँग, प्रेमचंद
22. कायर, प्रेमचंद
23. नमक का दारोगा, प्रेमचंद
24. शान्ति, प्रेमचंद
25. रानी सारंधा, प्रेमचंद
26. परीक्षा, प्रेमचंद
27. सती, प्रेमचंद
28. शतरंज के खिलाड़ी, प्रेमचंद
29. मर्यादा की वेदी, प्रेमचंद
30. राजा हरदौल, प्रेमचंद
31. डिस्कवरी ऑफ इण्डिया, जवाहर लाल नेहरू